Other Important Books

Buy books at great discounts on: www.examcart.in | www.amazon.in/examcart |

AGRAWAL EXAMCART
Paper Pakka Fasega!
CB1987

SOLUTIONS BOOKLET OF SSC सामान्य अध्ययन QUESTION BANK
CB1987
AGRAWAL EXAMCART

SOLUTIONS BOOKLET OF
SSC सामान्य अध्ययन
QUESTION BANK
ISBN - 978-93-6890-277-5
₹ 179

SOLUTIONS BOOKLET
OF
SSC सामान्य अध्ययन QUESTION BANK

Code	Price	Pages	ISBN
CB1987	₹ 179	178	978-93-6890-277-5

विषय सूची

➔ **परीक्षा से सम्बन्धित महत्वपूर्ण सूचना (Important Information)** v
(SSC परीक्षा की सम्पूर्ण जानकारी एवं पुस्तक या किसी भी समस्या के लिए हमारा Helpline No.)

सामान्य अध्ययन व्याख्यात्मक हल

1. प्राचीन भारत का इतिहास	**1-7**
2. मध्यकालीन भारत का इतिहास	**8-14**
3. आधुनिक भारत का इतिहास	**15-27**
4. विश्व का इतिहास	**28**
5. कला एवं संस्कृति	**29-45**
6. भारत का भूगोल	**46-56**
7. विश्व का भूगोल	**57-67**
8. पर्यावरण और पारिस्थितिकी	**68-70**
9. भारतीय राजव्यवस्था एवं संविधान	**71-86**
10. भारतीय अर्थव्यवस्था	**87-101**
11. भौतिक विज्ञान	**102-110**
12. रसायन विज्ञान	**111-121**
13. जीव विज्ञान	**122-133**
14. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी	**134-138**
15. IT-कम्प्यूटर	**139-147**
16. सामान्य ज्ञान विविध	**148-172**

अतिरिक्त अध्ययन सामग्री ई-बुक (Extra Study Material E-Book)

Extra Study Material ई-बुक का Content

➔ अभ्यास के लिए 1200+ अति महत्वपूर्ण अध्याय-वार MCQs

➔ डिस्काउंट कूपन दिया गया है। उसका उपयोग करें और 'www.examcart.in' से हमारी किताबें सबसे अच्छे डिस्काउंट पर खरीदें।

नोट : Link Expire होने से पहले दिए गए **QR Code** को स्कैन करके आप यह **Extra Study Material E-Book** को Download कर लें।

अध्याय

1

प्राचीन भारत का इतिहास

व्याख्यात्मक हल

1. (C)

2. (C) प्राचीन भारतीय पांडुलिपियाँ आमतौर पर ताड़ पत्रों या हिमालय में उगने वाले भोज वृक्ष (बिर्च छाल) की छाल पर लिखी जाती थी।

3.(D) **4.**(B)

5. (D) आंध्र प्रदेश राज्य में गोट्टीप्रोलू नामक पुरातात्विक स्थल स्थित है, जिसके एक प्राचीन काल का समुद्री व्यापार केंद्र होने के प्रमाण मिले हैं। यह स्थान स्वर्णमुखी नदी की वितरिका के दायें स्थित है। इस स्थान से ईंट से निर्मित विभिन्न आकारों और रूपों की संरचना मिली है।

6. (A) महागड़ा पूर्व–ऐतिहासिक स्थल मिट्टी की सतहों पर खुर के निशान के रूप में मवेशियों के पालन का पुरातात्विक प्रमाण प्रदान करता है। यह उत्तर प्रदेश के प्रयागराज जिले की मेजा तहसील के पहाड़ी क्षेत्र में बेलेन नदी के दाहिनी तट पर स्थित है।

- मेहरगढ़ एक प्रगैतिहासिक स्थल है जो पाकिस्तान के बलूच क्षेत्र में है यहाँ पर कृषि के प्राचीनतम् साक्ष्य मिले हैं तथा जानवरों को पालने; जैसे–भेड़, बकरी व अन्य के भी अवशेष मिले हैं।
- कोल्डिहा (उत्तर प्रदेश) में स्थित एक प्रमुख स्थल है वहाँ चावल के साक्ष्य मिले हैं।
- गुफकराल नवपाषाण कालीन बस्ती कश्मीर में स्थित है।

7. (B)

8. (C) कार्बन काल निर्धारण (डेटिंग) का अर्थ बहुत पुरानी वस्तुओं में कार्बन के विभिन्न रूपों की मात्रा को मापकर उनके आयु गणना की करने विधि है।

- रेडियोकार्बन डेटिंग, जिसे कार्बन -14 विधि भी कहा जाता है, अमेरिकी भौतिक विज्ञानी विलार्ड एफ. लिब्बी द्वारा लगभग 1946 में विकसित की गई थी और यह 500 से 50,000 साल पुराने जीवाश्मों और पुरातात्विक नमूनों के डेटिंग के लिए एक महत्वपूर्ण तकनीक है।
- इस तकनीक का व्यापक रूप से कुशल भू–वैज्ञानिकों, मानवविज्ञानी, पुरातत्वविदों और जाँचकर्ताओं द्वारा किया जाता है।
- कार्बन-14 स्थिर दर पर क्षय करता है, इसलिए उस तिथि का अनुमान लगाया जा सकता है जिस पर किसी जीव की मृत्यु हुई थी, उसके अवशिष्ट रेडियोकार्बन की मात्रा को माप कर किया जा सकता है।

9.(C) **10.**(A) **11.**(B) **12.**(C) **13.**(C)

14.(B) **15.**(A) **16.**(D) **17.**(D)

18. (B) दओजली हेडिंग नवपाषाण स्थल असम में स्थित है। यह भारत के असम के दीमा हसाओं जिले में एक महत्वपूर्ण नवपाषाण स्थल है, जो चीन और म्यांमार में जाने वाले मार्गों के करीब ब्रह्मपुत्र घाटी के पास की पहाड़ियों पर स्थित है।

19. (A)

20. (C) महापाषाण संस्कृति (500 ई.पू. - 100 ई. पू.) हमें दक्षिण भारत के उस ऐतिहासिक भाग से परिचित कराती है, जब पाषाण काल में बड़े पत्थरों से घेरी गई समाधियाँ (कब्रें) उपयोग में लाई जाती थीं। भारतीय प्रायद्वीप के उच्च पहाड़ी भागों में रहने वाले लोग महापाषाण निर्माता कहलाते हैं। इसकी पहचान कब्रों से होती हैं। इन कब्रों को महापाषाण इसलिए कहा जाता है, क्योंकि इन्हें बड़े-बड़े पत्थरों के टुकड़ों से घेर दिया जाता था। इन कब्रों में दफनाए गए लोगों के न केवल अस्थिपंजर, बल्कि मृदभांड और लोहे के उपकरण भी प्राप्त हुए हैं।

21. (C)

22. (D) प्राचीन भारत में पत्थर के औजार बनाने के लिए प्रेशर फ्लैकिंग तकनीक का उपयोग किया जाता था। इस विधि में पत्थर के किनारों पर इसी नुकीली चीज जैसे हड्डी की छड़ से दवाब डालकर छीला जाता था।

23.(B) **24.**(B) **25.**(B)

26. (A) नवपाषाण युग में चताल हयूक सबसे प्रसिद्ध पुरास्थलों में से एक था, यह तुर्की में स्थित है।

- इस पुरातत्व स्थल की खोज ब्रिटिश पुरातत्व वेत्ता लेम्स मेलार्ट ने 1961 में की थी।
- यह पुरास्थल अना तो लिया के पठार पर स्थित है।

27.(B) **28.**(D) **29.**(B) **30.**(A) **31.**(B)

32.(C) **33.**(C) **34.**(B) **35.**(B) **36.**(A)

37.(A) **38.**(B) **39.**(A) **40.**(C) **41.**(A)

42.(D) **43.**(A) **44.**(B) **45.**(C) **46.**(C)

47.(D)

48. (B) हड़प्पा की अधिकांश मुहरें सेलखेड़ी से बनी हैं सेलखड़ी प्रायः कच्चे चूना पत्थर से निर्मित होती है।

- मानक हड़प्पा मुहरों का आयाम 2×2 था और आकार में वह लगभग चौकोर थीं।
- प्रत्येक मुहर में एक जानवर का चित्र और चित्रात्मक में लेखन होता है।
- मुहरों पर मुख्य रूप से, बाघ, हाथी, बैल, बाइसन, बकरी और अन्य जानवरों की आकृतियाँ उत्कीर्ण की गई हैं।
- यद्यपि हड़प्पा सभ्यता में लोथल और देशलपुर से ताँबे की मुहरें भी प्राप्त हुई हैं।

49. (A) सिन्धु घाटी सभ्यता के मोहनजोदड़ो स्थल में 'द ग्रेट बाथ (विशाल स्नानागार) पाया गया है यह सिन्धु घाटी सभ्यता के खंडहरों की सबसे प्रसिद्ध संरचनाओं में से एक है।

- कालीबंगा से कच्ची व पक्की ईंटों के साक्ष्य मिले हैं। यह स्थल हनुमानगढ़

जिले में घग्गर नदी के किनारे स्थित है। यहाँ से जुते हुऐ खेत के प्रमाण भी प्राप्त हुए हैं।

- लोथल गुजरात में भोगवा नदी किनारे स्थित है। यहाँ चावल के प्रमाण मिले हैं। यह एक पत्तन (बंदरगाह) नगर था।
- धौलावीरा का हड़प्पा स्थल गुजरात के खादिर द्वीप पर स्थित है। धौलावीरा स्थल की खोज 1967-68 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) के जे. पी. जोशी ने की थी। यहाँ पत्थर की ईंटों व मिट्टी के बर्तन और आभूषण के साक्ष्य मिलते हैं।

50. (A)

51. (D) सिंधु घाटी सभ्यता की लिपि अभी तक अपठित है, यद्यपि कुछ विद्वानों ने इसको पढ़ने का दावा किया है जिसमें H. D. सांकलिया प्रमुख है। परन्तु उस दावे की पुष्टि नहीं हो सकी है।

52.(D) **53.**(D) **54.**(A) **55.**(A) **56.**(D)

57. (A) टेराकोटा द्रव्य का उपयोग हड़प्पा काल की मुद्राओं के निर्माण में मुख्य रूप से होता था। "टेराकोटा" (मृणमूर्तियाँ/मिट्टी की मूर्तियाँ) सैंधव सभ्यता में उपलब्ध 'शिल्प–आकृतियों' में बड़ी संख्या में पायी गयी हैं। मृणमूर्तियाँ लाल रंग की ठोस पकाई मिट्टी से बनी थीं जिन पर लाल रंग का लेप किया गया था, कभी-कभी चटक रंग भी पाया जाता है। साँचे में ढालकर निर्मित कुछ मृणमूर्तियों के अतिरिक्त अधिकांश मूर्तियाँ हाथ से बनाई गयी हैं इनमें मानव मूर्तियाँ ठोस हैं, जबकि पशु–पक्षियों की मूर्तियाँ प्रायः खोखली प्राप्त हुयी हैं। हड़प्पा में नारी आकृतियों की अधिकता है, जबकि मोहनजोदड़ो से पुरुष आकृतियाँ अधिक संख्या में पायी गयी हैं।

58.(C) **59.**(D) **60.**(D) **61.**(C) **62.**(C)

63.(A) **64.**(B)

65. (C) भारत के गुजरात राज्य में सिंधु घाटी सभ्यता से संबंधित गोला धोरा स्थल स्थित है। गुजरात से कई सिंधु स्थल प्राप्त हुए हैं, जिनमें से लोथल सबसे महत्वपूर्ण है।

66. (B) सुरकोटदा पुरातात्विक स्थल गुजरात में स्थित है। यह स्थल सिन्धु घाटी की सभ्यता से सम्बन्धित है।

67. (A) बनावली हरियाणा राज्य में स्थित एक पुरातात्विक स्थल है, जो कि सिन्धु घाटी की सभ्यता से सम्बन्धित है। यह कालीबंगा से 120 किमी. तथा फतेहाबाद से 16 किमी दूर स्थित है।

68.(C) **69.**(A) **70.**(A) **71.**(D) **72.**(B)

73.(C)

74. (A) केन्द्रीय बजट 2021 में पाँच पुरातात्विक स्थलों को 'साइट संग्रहालयों के साथ प्रतिष्ठित साइटों के रूप में विकसित करने का प्रस्ताव दिया गया जिसमें कालीबंगा (राजस्थान) नहीं है। ये निम्नलिखित पाँच स्थल हैं–राखीगढ़ी (हरियाणा), हस्तिनापुर (उत्तर प्रदेश) शिवसागर (उड़ीसा) धौलावीरा (गुजरात) आदिमचनल्लूर (तमिलनाडु) हैं।

75. (B)

76. (C) धौलावीरा हड़प्पाकालीन नगर कच्छ के रण में खदिर बेत पर स्थित था और इसे तीन भागों में बाँटा गया था।

- इस नगर की खोज जगपति जोशी ने 1969 में की तथा इसके बाद इसका उत्खनन कार्य 1989 से 1991 तक आर.एस. विष्ट के द्वारा किया गया।
- यह स्थल नूनी नदी के किनारे स्थित था।
- यहाँ से घोड़े की आकृति के साक्ष्य, सैंधव लिपि के दस अक्षर आदि के साक्ष्य मिले हैं।

77.(A) **78.**(C)

79. (D) पुरातात्विक अवशेष के रूप में उत्तम किस्म के जौ लोथल में नहीं पाये गये।

- यहाँ से प्राप्त अन्य अवशेषों में धान (चावल), फारस की मुहरों एवं घोड़ों की लघु मृणमूर्तियों के अवशेष शामिल हैं।
- लोथल गुजरात के अहमदाबाद जिले में 'भोगवा नदी' के किनारे; सरगवाला नामक ग्राम के समीप स्थित है।
- लोथल में गढ़ी और नगर दोनों एक ही रक्षा प्राचीर से घिरे हैं।

80. (D) पुरातत्विक अवशेष के रूप में युगल शवाधान कालीबंगा से नहीं पाए गए हैं। युगल शवाधान लोथल से पाए गए हैं। कालीबंगा सिन्धु सभ्यता का एक स्थल है, जो वर्तमान में राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में है। कालीबंगा से काले रंग की चूड़ियाँ, अग्निकुण्ड, हल से जुते खेत के अवशेष मिले हैं।

81. (B)

82. (C) दाओजली हेडिंग हड़प्पा सभ्यता स्थल से जेडाइट पत्थर पाया गया है।

- यह पुरास्थल असम प्रान्त स्थित कद्दार पर्वत के उत्तरी क्षेत्र में स्थित है, यहाँ से सिन्धु सभ्यता के अलावा नवपाषाण काल के साक्ष्य भी प्राप्त होते है।
- इस पुरास्थल से, वेधनी, छेदनी और पत्थर और कुल्हाड़ी के अवशेष प्राप्त हुये हैं।

83.(D) **84.**(C) **85.**(B) **86.**(C) **87.**(D)

88.(A) **89.**(B) **90.**(C) **91.**(A) **92.**(B)

93.(B) **94.**(C) **95.**(A) **96.**(A) **97.**(A)

98.(A) **99.**(A) **100.**(D) **101.**(B) **102.**(C)

103.(A) **104.**(D) **105.**(A) **106.**(D) **107.**(D)

108.(B) **109.**(A) **110.**(D) **111.**(A) **112.**(B)

113.(A) **114.**(A)

115. (C) ऐतरेय ब्राह्मण में राज्याभिषेक समारोह तथा चारों वर्णों के कर्तव्यों का उल्लेख किया गया है। ऐतरेय एवं कौशीतकी ब्राह्मण ऋग्वेद से सम्बन्धित हैं।

116. (C)

117. (C) ऋग्वेद में सरस्वती नदी का उल्लेख सर्वाधिक बार हुआ है इसे नदीतमा कहा गया है। गोमति (गोमल), इंडस (सिन्धु) झेलम (वितस्ता), चेनाब (अस्किनी), रावी (परुषणी), व्यास (विपासो), सतलुज (शतुद्रि), कुर्रम (क्रुमु), घग्घर (दृश्दावती), काबुल (कुमा) तथा स्वात (सुवस्तु) नदियों का उल्लेख किया गया है।

118. (C) 'पूर्व - मीमांसा' वेदांग नहीं है। वेदांग की संख्या 6 है जिसमें शिक्षा, कल्प, व्याकरण, छन्द, ज्योतिष और निरुक्त है।

मीमांसा दर्शन छः दर्शनों में से एक है। इस वैदिक शास्त्र को 'पूर्व मीमांसा' और वेदान्त को उत्तर मीमांसा भी कहा जाता है।

119.(C) **120.**(B) **121.**(D) **122.**(A) **123.**(B)

124.(D)

125. (B) सामवेद–विज्ञान का ज्ञान सही मिलान नहीं है। सामवेद गीत–संगीत प्रधान है। प्राचीन आर्यों द्वारा साम का गान किया जाता था। सामवेद चारों वेदों में सबसे छोटा है।

126.(D) **127.**(B) **128.**(D) **129.**(A) **130.**(B)

131.(C) **132.**(A) **133.**(D) **134.**(C) **135.**(D)

136.(C) **137.**(C) **138.**(B)

139. (B) क्षत्रिय वर्ण धर्मसूत्रों और धर्मशास्त्रों द्वारा निर्धारित नियमों के अनुसार प्राचीन भारत में लोगों की रक्षा और न्याय के प्रशासन के लिए जिम्मेदार था ।

- क्षत्रिय वर्ण के लोगों का काम देश का शासन और शत्रुओं से उसकी रक्षा करना

है। मनु के अनुसार, इस वर्ण के लोगों का कर्तव्य वेदाध्ययन, प्रजापालन, दान और यज्ञादि करना तथा विषयवासना से दूर रहना है। वशिष्ठ ने इस वर्ण के लोगों का मुख्य धर्म अध्ययन, शस्त्राभ्यास और प्रजापालन बतलाया है।

- भारत में वर्ण व्यवस्था के अंतर्गत समाज को चार भागों में बाँटा गया है– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।
- प्रारम्भ में वर्ण व्यवस्था कर्म-आधारित थी जो उत्तर वैदिक काल के बाद जन्म-आधारित हो गयी।

140.(C) **141.**(A) **142.**(C) **143.**(B) **144.**(B) **145.**(B)

146. (B) बुद्ध के उपदेशों का संकलन त्रिपिटकों में मिलता है।

- त्रिपिटक बौद्ध धर्म का प्राचीनतम ग्रन्थ है।
- यह ग्रन्थ पाली भाषा में लिखे गये हैं और विभिन्न भाषाओं में अनुवादित हैं।
- त्रिपिटक तीन ग्रन्थों विनय पिटक, सुत्तपिटक तथा अभिधम्म पिटक का संयुक्त नाम है।
- तत्वार्थ जैन ग्रन्थ माना जाता है।

147.(B) **148.**(A) **149.**(B) **150.**(B) **151.**(D) **152.**(A)

153. (D) चार महान सत्य की अवधारणा बौद्ध धर्म से सम्बन्धित है। महात्मा बुद्ध ने अपने सामाजिक जीवन को छोड़ने के बाद, अपने जीवन की चार घटनाओं को चार महान सत्य के रूप में जाना था।

154.(C) **155.**(D) **156.**(A) **157.**(B)

158. (D) वर्धमान महावीर प्राचीन भारत में जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर थे। उन्हें जैन धर्म का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। उनका जन्म ज्ञातृक कुल के क्षत्रिय परिवार में हुआ था।

- ऋषभदेव पहले जैन तीर्थंकर थे।
- अजितनाथ दूसरे जैन तीर्थंकर थे।
- संभवनाथ तीसरे जैन तीर्थंकर थे।
- अभिनंदननाथ चौथे जैन तीर्थंकर थे।
- सुमतिनाथ पाँचवें जैन तीर्थंकर थे।
- पार्श्वनाथ 23 वें जैन तीर्थंकर थे।

159. (A) गोपुरम बौद्ध स्तूप की संरचना का हिस्सा नहीं है। गोपुरम एक स्मारकीय अटालिका है। प्रायः शिल्प से सुसज्जित एवं अधिकतर दक्षिण भारत के मन्दिरों के द्वार पर स्थित होती है। यह द्रविड़ शैली के मंदिरों से सम्बन्धित है।

160.(B) **161.**(B) **162.**(B) **163.**(D) **164.**(D) **165.**(C) **166.**(C) **167.**(B) **168.**(B) **169.**(A) **170.**(D) **171.**(C)

172. (A) पंचरात्र शैव संप्रदाय नहीं है। यह वैष्णव सम्प्रदाय है कृष्ण, बासुदेव, साम्ब, अनिरूद्ध पद्युम्न, पंचरात्र का निर्माण करते हैं। कापालिक, वीर शैव और पशुपथ शैव संप्रदाय हैं। शैव सम्प्रदाय हिन्दू धर्म की एक प्रमुख शाखा है। शैव में शाक्त, नाभ, दसनामी, नाग, आदि उपसम्प्रदाय हैं।

प्रश्नगत विद्वानों में फलाद वैशेषिक दर्शन शास्त्र स्थूल से जुड़ा है।

173.(C) **174.**(B) **175.**(D) **176.**(B)

177. (C) छठी शताब्दी ईसा पूर्व से बाद तक पंच–चिह्नित सिक्के (पंच मार्क) ताम्र धातु से बने थे।

- पंच चिह्नित सिक्का भारत में एक प्रकार का आदिम सिक्का है।
- पंच चिह्नित सिक्के का वजन मानक होता था लेकिन आकार में अनियमित होते थे।
- उस काल के सिक्कों को पुराण, कर्षापण कहा जाता था।

178.(B) **179.** (C) **180.**(C) **181.**(A) **182.**(B) **183.**(B) **184.** (A) **185.**(C) **186.**(D)

187. (C) अजातशत्रु ने वज्जि पर आक्रमण करने के संबंध में वास्साकार (Vassakara) नामक अपने मंत्री को बुद्ध के पास उनका परामर्श लेने के लिए भेजा। स्मरण रहे कि वज्जि के साथ तनावपूर्ण स्थिति अजातशत्रु के पिता बिम्बसार के समय से चली आ रही थी, चूँकि वज्जि गणराज्य के गौतम बुद्ध के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध थे वहीं अजातशत्रु गौतम बुद्ध में आस्था रखता था।

- स्मरण रहे की अजातशत्रु के समय ही प्रथम बौद्ध महासंगीति का आयोजन राजगृह में किया गया था जिसकी अध्यक्षता महाकश्यप ने की थी।

188. (C) जीवक बिम्बिसार के दरबार में नियुक्त किया था। बिम्बिसार (544–492 ईसा पूर्व) हर्यक राजवंश के संस्थापक थे। इनको श्रोणिक के नाम से भी जाना जाता था। वह भगवान बुद्ध के समकालीन थे। कोशलदेवी (कोशल के राजा की पुत्री और प्रसेनजित की बहन), चेल्लाना (लिच्छवी शासक चेतका की पुत्री और अजातशत्रु की माता) और खेमा (पंजाब के मद्रा की पुत्री) उसकी तीन पत्नियाँ थीं। जीवक बिम्बिसार के निजी चिकित्सक भी थे। जब अवंती के शासक, प्रद्योत को पीलिया हुआ तो बिम्बिसार ने जीवक को ही उनके पास भेजा था।

189.(B) **190.**(D) **191.**(B) **192.**(D) **193.**(B)

194. (B) यूनानी-रोमन कला को कंधार में स्थान प्राप्त हुआ था। ई.पू. प्रथम शताब्दी के मध्य में उत्तर-पश्चिम भारत में कंधार में कला की एक शैली का विकास हुआ जिसे कंधार शैली कहा जाता है। इस शैली को इन्डो–ग्रीक शैली भी कहा जाता है। इस शैली का सर्वाधिक विकास कुषाण शासकों के काल में हुआ। इस काल की विषय-वस्तु बौद्ध परम्परा से ली गई थी, किन्तु निर्माण की शैली यूनानी थी। कंधार कला शैली के अंतर्गत मूर्तियों में शरीर को यथार्थ रूप में दिखाने का प्रयास किया गया है।

195.(D) **196.**(B) **197.**(B) **198.**(B) **199.**(B)

200. (B) मेगस्थनीज के अनुसार शाही जुलूसों के दौरान चंद्रगुप्त के रक्षक सोने और चाँदी से सजाए गए हाथी की सवारी करते थे।

- मेगस्थनीज एक ग्रीक राजनयिक, इतिहासकार था जो मौर्य शासक चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में सेल्यूकस के दूत के रूप में आया था जिसने भारत की तत्कालीन सामाजिक आर्थिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक स्थिति का वर्णन अपनी पुस्तक 'इण्डिका' में किया था।
- हालांकि उनकी किताब, इंडिका समय की धाराओं में खो गई थी, बाद के लेखकों के साहित्यिक स्रोतों का उपयोग करके इसे कुछ हद तक फिर से बनाया गया है।
- मेगस्थनीज प्राचीन भारत का वर्णन करने वाला पहला विदेशी व्यक्ति था।

201.(D) **202.**(A) **203.**(A)

204. (C) मेगस्थनीज भारत में 302 ई. पू. में चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में यूनानी शासक सेल्यूकस निकेटर प्रथम का राजदूत बनकर आया था। इसने भारत भ्रमण किया और 'इण्डिका' नामक एक किताब लिखी जिसमें मौर्य प्रशासन और भारतीय संस्कृति की जानकारी मिलती है।

205.(B) **206.**(C) **207.**(B) **208.**(D) **209.**(B) **210.**(C) **211.**(B) **212.**(D) **213.**(B) **214.**(D) **215.**(B) **216.**(D) **217.**(B) **218.**(B) **219.**(B)

220. (D) जेम्स प्रिंसेप ईस्ट इण्डिया कम्पनी में एक अधिकारी के रूप में कार्यरत् थे। इन्होंने

1837 ई. में सर्वप्रथम ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपियों को पढ़ने में सफलता प्राप्त की।

- जबकि दयाराम साहनी अलेक्जेंडर कनिंघम तथा जान मार्शल ब्रिटिश भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग से संबंधित रहे हैं।

221. (B) सारनाथ स्तम्भ के ऊपर रखे हुए शेर जिन्हें अपने नोटों पर देखते हैं वास्तव में पत्थर पर नक्काशित हैं। अशोक ने बुद्ध के जीवन से सम्बन्ध रखने वाले स्थानों पर शैल स्तम्भ (पत्थर के स्तम्भ) बनवाए थे। स्तम्भों के अलावा शिलालेख चैत्य और बुद्ध विहारों का भी निर्माण कराया था। इसी कड़ी में निर्मित यह स्तम्भ मूलगन्ध कुटी से पश्चिम दिशा में बनाया गया था। मूल रूप से यह 15.25 मीटर ऊँचा था। जिसके ऊपरी सिरे पर चार सिंह (सिंह शीर्ष) थे। अब यह केवल 2.03 मीटर ऊँचे स्तम्भ पर अपने वास्तविक स्थान पर खड़ा है। यह 1.83 मीटर चौड़ा व 0.46 मीटर मोटा पत्थर है।

222.(D) **223.**(B) **224.**(D) **225.**(C) **226.**(B)

227.(D) **228.**(D) **229.**(D) **230.**(C) **231.**(A)

232.(B) **233.**(B)

234. (D) मेगस्थनीज के अनुसार, चंद्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में समाज 7 जातियों में विभाजित था। मौर्य साम्राज्य प्राचीनकालीन शक्तिशाली राजवंश था। मेगस्थनीज यूनानी शासक सेल्यूकस का एक राजदूत था, जो मौर्य शासक चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में आया था। उसने अपनी समसामयिक जानकारी अपनी पुस्तक इण्डिका में लिपिबद्ध की थी।

235. (A)

236. (A) अशोक के साम्राज्य के उत्तर पश्चिमी भाग में शिलालेख खरोष्ठी लिपि में लिखे गए थे। जबकि पूर्वी क्षेत्रों में ब्राह्मी लिपि का प्रयोग हुआ है और पश्चिमी क्षेत्रों के शिलालेख में खरोष्ठी लिपि का प्रयोग किया गया है।

237.(D) **238.**(C) **239.**(A) **240.**(A) **241.**(A)

242.(C)

243. (A) अशोक के प्रमुख शिलालेख VIII में यह उल्लेख है कि सम्राट धम्मयात्राएँ (भ्रमण) करेंगे। अशोक ने राज्याभिषेक के 10वें वर्ष धम्मयात्राएँ शुरू कीं और सबसे पहले बोधगया की यात्रा की। अशोक ने कुल 256 रातें अपनी धम्मयात्रा में बितायीं। धम्म का शाब्दिक अर्थ है 'सहिष्णुता की नीति' अर्थात् 'नैतिक आचरण का एक दस्तावेज'।

244. (B)

245. (B) सम्राट् अशोक ने बिहार के बोधगया में महाबोधि मन्दिर का निर्माण कराया। महाबोधि मन्दिर का सम्बन्ध भगवान बुद्ध की ज्ञान प्राप्ति से है। बोध गया में बोधि वृक्ष के नीचे तथा फल्गू (निरंजना) नदी के किनारे बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था।

246.(D) **247.**(B) **248.**(A) **249.**(D) **250.**(D)

251.(B)

252. (A) सांची के स्तूप का निर्माण अशोक ने करवाया था। साँची का स्तूप रायसेन (मध्य प्रदेश) में स्थित है। ये अशोक द्वारा बनवाये गये स्तूपों में सबसे विशाल और श्रेष्ठ है। इस स्तूप को 'महास्तूप' भी कहा जाता है। इसमें बुद्ध के शिष्य सारिपुत्र व मोग्लायन की अस्थियाँ रखी हुई हैं।

253.(C) **254.**(D) **255.**(B) **256.**(D) **257.**(C)

258.(B) **259.**(A) **260.**(D) **261.**(C) **262.**(B)

263.(B)

264. (D) गुजरात में सुदर्शन झील वस्तुतः एक कृत्रिम जलाशय है, जो मौर्यों के शासन के दौरान बनाया गया था।

सुदर्शन झील का निर्माण चन्द्रगुप्त मौर्य के प्रान्तीय शासक पुष्यगुप्त ने कराया था।

265.(B) **266.**(A) **267.**(C) **268.**(C) **269.**(C)

270.(B) **271.**(A) **272.**(D) **273.**(D) **274.**(A)

275.(B) **276.**(C) **277.**(D) **278.**(D) **279.**(D)

280.(C) **281.**(B) **282.**(A)

283. (C) सातवाहन वंश (60 ई. पूर्व – 225 ई.) की राजधानी प्रतिष्ठान में स्थित थी। सिमुक द्वारा सातवाहन राजवंश की स्थापना की गई। इस वंश का महानतम शासक गौतमी पुत्र शातकर्णी था।

- वज्जी की राजधानी वैशाली थी।
- विदिशा" को सुंग वंश के शासक पुष्यमित्र ने अपनी राजधानी बनाया था।
- पाटलिपुत्र मगध (मौर्य साम्राज्य) की राजधानी थी।

284. (C) कदम्ब राज्य की स्थापना मयूरशर्मन ने की थी। उसने अपनी राजधानी वैजयन्ती या वनवासी को बनाया था। मयूरशर्मन ने 18 अश्वमेध यज्ञ करने का श्रेय है। इसका राज्य क्षेत्र उत्तरी कर्नाटक था। कदम्बों की राजधानी बनवासी (वैजयन्ती) थी। बादामी के चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय ने इस वंश को हराकर अपने राज्य में मिला लिया था।

285. (C) मथुरा कला विद्यालय की आकृतियाँ धब्बेदार लाल पत्थर की बनी होती थीं। मथुरा कला विद्यालय में कुवेर, यक्ष, यक्षणी एवं नागों की आकृतियाँ बनायी गयी हैं।

- सिमुक राष्ट्रकूट वंश के संस्थापक थे।

286. (C) अमरावती कला विद्यालय आंध्र क्षेत्र में सातवाहनों के संरक्षण में विकसित हुई थी। आधुनिक आंध्र प्रदेश में स्थित अमरावती जैन मंदिर वास्तुकला शैली के लिए विख्यात है। अमरावती कला सातवाहन शासकों द्वारा विकसित शैली है।

287. (B) सातवाहन शासकों के शासनकाल के दौरान प्रसिद्ध अजन्ता गुफाओं में उत्कीर्णन का काम सबसे पहले शुरू किया गया था। सिमुक ने 60 ई. पूर्व में कण्व वंश के अन्तिम शासक सुशर्मा की हत्या कर सातवाहन वंश की स्थापना की थी। सातवाहन (आंध्र वंश) शासकों ने अपनी राजधानी प्रतिष्ठान (महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में) स्थापित की। इस वंश के शासकों में सिमुक, शातकर्णी, गौतमी पुत्र शातकर्णी, वशिष्ठीपुत्र पुलुमावी तथा यज्ञश्री शातकर्णी प्रमुख थे। सातवाहनों की प्रमुख स्थापत्य कृतियाँ हैं—कार्ले भाजा के चैत्य, अजंता एवं एलोरा की गुफाओं का निर्माण एवं अमरावती कला का विकास उल्लेखनीय है।

288. (D)

289. (B) गौतमीपुत्र शातकर्णी दूसरी शताब्दी ई.पू. में राष्ट्रकूट साम्राज्य के महानतम शासक थे। गौतमीपुत्र शातकर्णी के बारे में उपलब्ध जानकारी उनके सिक्कों, सातवाहन शिला लेखों और विभिन्न पुराणों में शाही वंशावली से मिलती है। इनमें सबसे प्रसिद्ध उनकी माँ गौतमी बलश्री का नासिक प्रशस्ति (स्तवन) शिलालेख है।

290. (C) वह महानतम कुषाण शासक नेता कनिष्क था जो अपने शासन के आरम्भिक वर्षों में ही बौद्ध बन गया था। पेशावर में प्रसिद्ध चैत्य का निर्माण करवाकर कनिष्क ने बौद्ध धर्म के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट की। उसने बौद्ध धर्म की महायान शाखा को राज्याश्रय प्रदान किया था तथा उसका मध्य एशिया एवं चीन में प्रचार एवं प्रसार करवाया। उसके शासन काल में कश्मीर के कुण्डलवन में बौद्ध धर्म की चतुर्थ महाबौद्ध संगीति का आयोजन किया गया था। जिसकी अध्यक्षता प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान वसुमित्र ने की थी तथा अश्वघोष उसके उपाध्यक्ष बनाये गये थे।

291.(A) **292.**(A) **293.**(B) **294.**(A) **295.**(A)

296.(D) **297.**(C) **298.**(B)

299. (B) प्राचीन भारत में वाकाटक राजवंश के संस्थापक विंध्यशक्ति थे। वाकाटक शब्द का प्रयोग प्राचीन भारत के एक राजवंश के लिए किया जाता है जिसने तीसरी सदी के मध्य से छठी सदी तक शासन किया था।

300. (C) इतिहासकारों का मानना है कि कई कुषाण शासक जिन्होंने खुद को 'देवपुत्र' या 'ईश्वर का पुत्र' कहना शुरू किया था, संभवतः चीनी संस्कृति के सम्राटों से प्रेरित थे। कुषाण वंश का संस्थापक कुजुल कडफिसस था। इस वंश का सबसे महान शासक कनिष्क था। इसके समय गंधार शैली और मथुरा शैली का जन्म हुआ। इसकी दो राजधानियाँ–पुरुषपुर (पेशावर) और मथुरा थी।

301. (B) कनिष्ठ कुषाण राजवंश से सम्बन्धित थे। कुषाण राजवंश प्राचीन भारत के राजवंशों में से एक था। कुषाण वंश का संस्थापक कुजुल कडफिसेस था। कुषाणों को यूची और तोंखरी भी कहते थे। कनिष्क इस वंश का सबसे प्रतापी राजा था। कनिष्क ने 78 ई. में एक संवत् चलाया जिसे आक् संवत् कहते हैं। भारत सरकार द्वारा इस कैलेंडर को 22 मार्च, 1957 को अपनाया गया।

302.(A) **303.**(D) **304.**(C) **305.**(A) **306.**(C)

307.(C) **308.**(B) **309.**(C) **310.**(D) **311.**(A)

312.(B) **313.**(A) **314.**(B)

315. (A) पुष्यमित्र जो कि अन्तिम मौर्य सम्राट बृहद्रथ का सेनापति था ने राजा की हत्या कर दी और एक नए राजवंश की स्थापना की। पुष्यमित्र शुंग, जाति से ब्राह्मण था, उसके पुरोहित पतंजलि थे। पतंजलि द्वारा रचित महाभाष्य में पुष्यमित्र द्वारा किये गये कई यज्ञों का उल्लेख किया गया है।

पुष्यमित्र शुंग को भारत के सबसे महान सम्राटों में से एक माना जाता है, जिन्होंने विदेशी यवन शक्तियों के खिलाफ लड़ाई लड़ी और उन्हें भारत की सीमा से बाहर खदेड़ दिया था।

316.(B) **317.**(D)

318. (A) महाराजाधिराज की उपाधि धारण करने वाला प्रथम गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त प्रथम था।

- चन्द्रगुप्त प्रथम गुप्त वंश के तृतीय किन्तु स्वतंत्र शासक थे। गुप्त आरंभ में भाराशिव वंश के सामन्त थे।
- चन्द्रगुप्त प्रथम ने लगभग 319 ईसवी से 350 ईसवी तक आासन किया।
- इन्होंने अपने जीवन काल में ही अपने सुयोग्य पुत्र समुद्रगुप्त को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था।

319.(A) **320.**(D) **321.**(B) **322.**(C) **323.**(B)

324. (C) गुप्त वंश के वह राजा स्कन्दगुप्त था जिसने हूणों को भारत पर आक्रमण करने से रोका। हूणों का प्रथम आक्रमण स्कन्द गुप्त के काल में हुआ। गुप्त ने युद्ध में हूणों को पराजित किया था। इस युद्ध का उल्लेख भितरी स्तम्भ लेख से प्राप्त होता है। स्कन्दगुप्त ने जूनागढ़ अभिलेख में भी हूणों के आक्रमण का उल्लेख है। हूणों का नेता तोरमाण था।

325. (C) कवि कालिदास गुप्त वंश के शासक चन्द्रगुप्त 'विक्रमादित्य' के दरबारी राजकवि थे। उन्हें सात ग्रन्थों की रचना का श्रेय दिया जाता है–रघुवंश, कुमारसंभव, मेघदूत, ऋतुसंहार, मालविकाग्निमित्रम, विक्रमोर्वशीयम् तथा अभिज्ञानशाकुन्तलम शामिल हैं। इनमें प्रथम दो महाकाव्य, दो खण्डकाव्य (गीत काव्य) तथा तीन नाटक हैं, इनमें नाटक अभिज्ञानशाकुन्तलम को अत्यधिक ख्याति एवं प्रशंसा प्राप्त है तथा इसका अनुवाद कई विदेशी भाषाओं में अब तक किया जा चुका है।

326.(D) **327.**(C) **328.**(D)

329. (D) महाराजाधिराज की उपाधि धारण करने वाला गुप्त वंश का पहला शासक चंद्रगुप्त प्रथम था। गुप्तों का आधिपत्य आरम्भ में दक्षिण–बिहार तथा उत्तर पश्चिम बंगाल पर था। चन्द्रगुप्त ने इसका सुदूर तक विस्तार किया और महाराजधिराज की उपाधि धारण की थी।

330.(B) **331.**(D) **332.**(C)

333. (B) नालंदा महाविहार की स्थापना राजा कुमारगुप्त प्रथम ने की थी। यह प्राचीन भारत में उच्च शिक्षा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और विख्यात केन्द्र था।

- यह विश्वविद्यालय स्थापत्य कला का अद्भुत नमूना था तथा यह भारतीय उपमहाद्वीप का सबसे पहला नियोजित विश्वविद्यालय था।
- इस विश्वविद्यालय में तीन श्रेणियों के आचार्य शिक्षण कार्य करते थे जो अपनी योग्यतानुसार प्रथम, द्वितीय और तृतीय श्रेणी में आते थे।
- नालंदा के प्रसिद्ध आचार्यों में शीलभद्र, धर्मपाल, चंद्रपाल, गुणमति और स्थिरमति प्रमुख थे।
- यह एक प्रतिष्ठित विश्व धरोहर का दर्जा पाने वाला भारत का 26वाँ सांस्कृतिक स्थल है।

334.(D) **335.**(C) **336.**(B)

337. (C) ब्रह्मगुप्त ने 'कुट्टक' और 'कुट्टाकग्निता' शब्द का प्रयोग 'बीजगणित' के लिए किया था। ब्रह्मगुप्त प्रसिद्ध भारतीय गणितज्ञ थे। मध्यकालीन यात्री अलबरूनी ने भी ब्रह्मगुप्त का उल्लेख किया है। इन्होंने दो ग्रंथ ब्राह्मस्फुट सिद्धान्त और खण्ड–खाद्यक या खण्डखाद्य पद्धति लिखे हैं।

338. (D) विंध्य क्षेत्र (मध्य भारत) में स्थित वन राज्य को 'अत्विका राज्य' के रूप में जाना जाता है।

- इस क्षेत्र पर समुद्रगुप्त ने विजय प्राप्त की थी।
- समुद्रगुप्त द्वारा जीते गए स्थानों और क्षेत्रों को पाँच समूहों में विभाजित किया गया है।
- वनवासी साम्राज्य समूह III के अंतर्गत आता है।
- गुप्त वंश के समुद्रगुप्त (335-375 ई.) को भारत का नेपोलियन कहा जाता है।

339.(C) **340.**(B) **341.**(A) **342.**(A)

343. (D) इलाहाबाद (प्रयागराज) स्तंभ शिलालेख में समुद्रगुप्त की उपलब्धियाँ अभिलिखित की गई हैं जो अपनी विजय के लिए 'नेपोलियन ऑफ इंडिया' के नाम से जाने जाते हैं।

इलाहाबाद (प्रयागराज) स्तंभ को बनाने का श्रेय अशोक को दिया जाता है। स्तंभ शिलालेख पर ज्यादातर शब्द और चिह्न गुप्त वंश के राजा समुद्रगुप्त से सम्बंधित हैं।

344.(D) **345.**(B) **346.**(D) **347.**(A) **348.**(B)

349.(B) **350.**(C) **351.**(B) **352.**(D) **353.**(D)

354.(C) **355.**(D) **356.**(A) **357.**(C) **358.**(A)

359.(B) **360.**(C) **361.**(B) **362.**(A) **363.**(A)

364.(C) **365.**(D) **366.**(C)

367. (A) तीर्थयात्रियों के राजकुमार के रूप में प्रतिष्ठित ह्वेनत्सांग ने सम्राट हर्ष के शासनकाल के दौरान 627 से 647 ई. तक भारत का दौरा किया था।

ह्वेनत्सांग एक प्रसिद्ध चीनी बौद्ध भिक्षु था। वह भारत में 15 वर्षों तक रहा।

368.(B) **369.**(C) **370.**(B) **371.**(D) **372.**(D)

373. (D) एक प्रसिद्ध तमिल महाकाव्य, सिलप्पा-दिकारम की रचना इलंगो नामक एक कवि ने लगभग, 1800 वर्ष पहले की थी।

- शिलप्पादिकारम को 'तमिल साहित्य' के प्रथम महाकाव्य के रूप में जाना जाता है। इसका शाब्दिक अर्थ है– ''नूपुर (पायल) की कहानी''
- इस महाकाव्य की रचना चोल वंश के शासक सेन गुट्टुबन के भाई इलंगो आदिगल ने की थी। 'शिलप्पादिकारम' की सम्पूर्ण कथा नूपुर के चारों ओर घूमती है।
- इस महाकाव्य के नायक और नायिका 'कोवलन' और 'कण्णगी' हैं।

374. (A)

375. (D) संगम काल के दौरान तमिल क्षेत्र में, भूमिहीन मजदूरों जिनमें दास भी शामिल होते थे, को कडैसियार और अदिमई के रूप में जाना जाता था।
- तमिल क्षेत्र में, बड़े जमींदारों को वेल्लार के रूप में जाना जाता था।
- साधारण हल चलाने वालों को उझावर के रूप में जाना जाता था।
- तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से तीसरी शताब्दी तक के प्राचीन काल को संगम काल कहते हैं।

376. (B) चोलकाल के दौरान, मुवेदवेलन और अरइयार धनी बड़े भूस्वामियों की उपाधियाँ थीं। चोल काल में आन्तरिक एवं बाह्य व्यापार समृद्ध अवस्था में था। दोनों ही प्रकार के व्यापार का नियंत्रण व्यापारी वर्ग के के हाथों में था जिसके कारण व्यापारी धनी वर्ग में शामिल हो गए और इन्हें राज्य द्वारा विभिन्न उपाधियाँ दी जाती थीं। चोलवंश की स्थापना विजयालय ने की थी उनकी आरम्भिक राजधानी उरैयूर थी बाद में ताजबुर बनी।

377.(B) **378.**(C) **379.**(B) **380.**(C) **381.**(A)

382.(D) **383.**(C) **384.**(C) **385.**(C) **386.**(D)

387.(D)

388. (B) देवी निशुम्भसूदनी का मंदिर चोलों द्वारा बनवाया गया था। चोल वंश का शासक विजयालय एक शक्तिशाली शासक था। उसने पल्लवों और पाण्डवों को हराकर तंजौर को अपनी राजधानी बनाया था। यहीं उसने निशुम्भसूदनी का मन्दिर भी बनवाया था।

389.(D) **390.**(D) **391.**(D) **392.**(D) **393.**(A)

394.(A)

395. (D) पट्टादकल में मल्लिकार्जुन और विरुपाक्ष मन्दिरों को राजा विक्रमादित्य द्वितीय की दो रानियों द्वारा चालुक्यों की पल्लवों पर विजय के स्मरणोत्सव के रूप में बनाया गया था।

396.(D) **397.**(B) **398.**(B)

399. (B) ऐहोल प्रशस्ति (634 ई.) का सम्बन्ध चालुक्य वंश से है। संस्कृत काव्य परम्परा में लिखा गया यह अभिलेख पुल्केशिन द्वितीय की विजय गाथा का वर्णन करता है। इसकी रचना जैन कवि रविकीर्ति ने की थी। इसमें पुल्केशिन द्वारा हर्षवर्द्धन को 618 ई. में नर्मदा नदी के तट पर हराये जाने का वर्णन भी है। चालुक्यों की राजधानी बादामी थी।

400. (D)

401. (B) चोल शासकों ने सम्मान के संकेत के रूप में अमीर भूस्वामी को मुवेन्देवेलन, अरियार आदि जैसी उपाधियाँ प्रदान कीं। उनके द्वारा ब्राह्मणों को दान स्वरूप दी जाने वाली भूमियों को ब्रह्मदेय कहा जाता था। चोल वंश का संस्थापक विजयालय था।

402.(B) **403.**(C) **404.**(C) **405.**(B) **406.**(A)

407.(D) **408.**(A)

409. (A) राजेन्द्र प्रथम चोल राजवंश का सबसे महान शासक था। राजेन्द्र चोल प्रथम गंगा विजेता के नाम से प्रसिद्ध है।
- उसने अपनी महान विजयों द्वारा चोल साम्राज्य का विस्तार कर उसे दक्षिण भारत का सर्व शक्तिशाली साम्राज्य बनाया। उसने 'गंगई कोंड' की उपाधि धारण की तथा गंगई कोंड चोलपुरम नामक नगर की स्थापना की। वहीं पर उसने चोल गंगम नामक एक विशाल सरोवर का भी निर्माण किया।
- विजयालय को चोल राजवंश का द्वितीय संस्थापक भी माना जाता है। विजयालय चोल, चोल राजवंश द्वारा स्थापित तंजावुर राज्य के राजा थे।

410.(A) **411.**(C) **412.**(A) **413.**(C) **414.**(B)

415. (C) शाही चोलों के तहत राजस्व प्रशासन के सन्दर्भ में शालाभोग एक स्कूल के रख–रखाव के लिए दान की गई भूमि थी। चोल शिलालेखों के अनुसार, चोल राजाओं ने अपनी प्रजा को पाँच प्रकार की 'भूमि उपहार' में दी थी।
यह विद्यालय के रखरखाव के लिए दान की गई भूमि है,
मंदिरों को दान में दी गई भूमि,
पल्लीचंदम; जैन संस्थानों को दान में दी गई भूमि,
ब्रह्मदेय–ब्राह्मणों को उपहार में दी गई भूमि थी।
गैर ब्राह्मण किसानों मालिकों को दान की गई भूमि।

416. (B) महाबलीपुरम रथ मंदिरों का निर्माण पल्लवों द्वारा करवाया गया था। महाबलीपुरम के सप्तरथ मन्दिरों को सप्त पैगोडा भी कहा जाता है। महाबलीपुरम के रथ मंदिरों का निर्माण सातवीं शताब्दी में पल्लव शासक नृसिंह देव वर्मन ने कराया था। यहाँ पर गंगावतरण जैसी मूर्तियों से युक्त गुफा मंदिर एवं शैव मंदिर प्रमुख हैं।

417.(A) **418.**(C) **419.**(A) **420.**(A) **421.**(C)

422.(B) **423.**(C) **424.**(A) **425.**(D) **426.**(C)

427.(C)

428. (C) संगम कविताओं में वर्णित तमिल शब्द मुवेन्दर (Muvendar) का अर्थ धनी है।
- प्राचीन संगम साहित्य में तत्कालीन भारत की तीन दक्षिणी शक्ति, चेर, चोल, पाण्डया थी।

429.(A) **430.**(A) **431.**(D)

432. (C) दंतिदुर्ग ने हिरण्यगर्भ नामक एक अनुष्ठान किया था।
- दंतिदुर्ग राष्ट्रकूट वंश का आरम्भिक शासक और इस वंश का संस्थापक था।
- दंतिदुर्ग आरंभ में बातापी के चालुक्यों का सामंत था, जिसने स्वतंत्र होने के उपलक्ष में यह अनुष्ठान करवाया था।
- राष्ट्रकूट अभिलेखों में कहा गया है कि दन्तिदुर्ग द्वारा किये इस अनुष्ठान में प्रतिहार शासक ने द्वारापाल की भूमिका निभाई थी, जो उसकी दुर्बलता का प्रतीक था।

433.(B) **434.(D)** **435.**(A) **436.**(D) **437.**(A)

438.(D) **439.**(A) **440.**(C) **441.**(A) **442.**(D)

443.(D) **444.**(A) **445.**(B)

446. (A) नाम्ड्रोलिंग मठ कर्नाटक राज्य में स्थित है। यह कर्नाटक के मैसूर जिले के बैलकुप्पे में स्थित है। यह बौद्ध शिक्षा का आज भी केन्द्र है।

447.(C) **448.**(C) **449.**(D) **450.**(D) **451.**(D)

452.(C) **453.**(D) **454.**(D) **455.**(B) **456.**(D)

457.(B) **458.**(B) **459.**(B)

460. (D) कुलीन प्रथा सेन वंश के शासनकाल से सम्बन्धित थी बंगाल में यह कुलीन प्रथा खूब बढ़ी तथा वहाँ कुलीन ब्राह्मणों ने बहुत ही ऊँचा दहेज लेकर इस प्रथा को आगे बढ़ाया था। शैक्षणिक प्रतिष्ठा के साथ विवाह

सम्बन्ध में इस प्रकार के परिवार बंगाल में श्रेष्ठ माने जाते थे।

461.(C) **462.**(C) **463.**(D) **464.**(C) **465.**(B)

466.(D) **467.**(B) **468.**(C) **469.**(C) **470.**(A)

471. (A) पल्लवों के अभिलेखों में कई स्थानीय सभाओं की चर्चा है। इनमें से एक था ब्राह्मण भूस्वामियों का संगठन जिसे सभा कहते थे।

- पल्लव वंश का संस्थापक सिंह विष्णु था उसका राज्य आर्य संस्कृतिक पर आधारित था। ब्राह्मणों को राजाओं द्वारा संरक्षण दिया जाता था, और उन्हें भूमि अनुदान में दी जाती थी इसे ब्रह्मदेय कहा जाता था।
- पल्लव राजा रूढ़िवादी हिन्दू थे और शिव शिव और विष्णु की पूजा करते थे।

472.(A) **473.**(A) **474.**(B) **475.**(A) **476.**(D)

477.(B) **478.**(B) **479.**(C) **480.**(D) **481.**(A)

482.(D) **483.**(B) **484.**(C) **485.**(D) **486.**(B)

487.(A)

488. (A) निंगथौजा राजवंश द्वारा भारत के मणिपुर राज्य पर शासन किया था। निंगथौजा राजवंश को यंग वंश के रूप में भी जाना जाता है, जिसमें मणिपुर के राजाओं के वंशज शामिल हैं। निंगथौजा का अर्थ है राजा की संतान। इसमें 125 परिवार विस्तारित हैं।

489.(C) **490.**(C) **491.**(C)

492. (D) रामपुरवा के अशोक स्तंभ के शीर्ष पर वृषभ पशु की मूर्ति चित्रित की गई है। रामपुरवा बिहार के जिला चम्पारन में एक ऐतिहासिक गाँव है जहाँ से मौर्य वंश के शासक अशोक के दो खण्डित स्तंभ प्राप्त हुए हैं। यहाँ से प्राप्त स्तम्भों की खोज 1876 में ए.सी.एल. कार्लाइल ने की थी।

493.(D) **494.**(B) **495.**(D) **496.**(D) **497.**(A)

498.(C) **499.**(B)

500. (B) प्राचीन भारत के चिकित्सक त्रय के रूप में चरक, सुश्रुत और पतंजलि को जाना जाता है। चरक प्राचीन भारत में आयुर्वेद आधारित चिकित्सा पद्धति के जनक थे। सुश्रुत प्रमुख शल्यचिकित्सक थे। पतंजलि योग चिकित्सा पद्धति के जनक तथा व्याकरणाचार्य थे।

501.(D) **502.**(C)

503. (B) राष्ट्रकूट और चोल राजवंशों के दौरान कुछ महत्वपूर्ण प्रशासनिक पद आनुवंशिक बन गए नगरश्रेष्ठी का अर्थ शहर का व्यापारी था।

- इन वंशों के शासन के दौरान नगरश्रेष्ठी किसी नगर के सम्पूर्ण व्यापार पर अधिनियंत्रण रखने वाला प्राधिकारी था जो सम्पूर्ण नगर की व्यापार/बाजार व्यवस्था को नियंत्रित करता था। चोलों के स्थानीय स्वशासन के दौरान इसने अधिक प्रमुखता प्राप्त की थी।

504. (C)

505. (C) कदंब मयूरशर्मण ने अपने परम्परागत पेशे को छोड़कर शस्त्र को अपना लिया और कर्नाटक में अपना राज्य सफलतापूर्वक स्थापित किया।

- कदम्ब शासक ब्रहमण थे, मयूरवर्मन शासक बनने से पूर्ण पाण्डित्य कर्म यज्ञ–यापन आदि कार्यों में संलग्न थे परन्तु दक्षिण भारत में बिगड़ती राजनैतिक स्थितियों ने उन्हें शस्त्र उठाने पर मजबूर किया था।

506. (C) जुमान जांग और अन्य दूसरे बौद्ध यात्रियों ने जहाँ अध्ययन में अपना समय व्यतीत किया वह एक प्रमुख बौद्ध विश्वविद्यालय नालंदा था जो वर्तमान बिहार राज्य में स्थित है।

- नालंदा विश्वविद्यालय का निर्माण गुप्त शासक कुमार गुप्त बौद्ध शिक्षा के अध्ययन के लिए करवाया था परन्तु 12 वीं शताब्दी में एक तुर्क अक्रान्ता बाख्तियार खिलजी ने इसे नष्ट कर दिया था। वर्तमान में इसके खण्डहर ही शेष है।
- वर्तमान बिहार सरकार और केन्द्र सरकार के संयुक्त प्रयासों से इस विश्वविद्यालय का पुनर्निमाण करवाया जा रहा है।

507. (A) धर्मपाल ने विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना की और नालंदा विश्वविद्यालय को पुनर्जीवित किया।

- विक्रमशिला की स्थापना धर्मपाल ने आठवीं–नौवीं शताब्दी में की थी।
- ये भारत के बिहार में भागलपुर के पास कहलगाँव में स्थित है।
- ये दोनों भारत में शिक्षा के सबसे महत्वपूर्ण केन्द्रों में से एक थे।
- विक्रमशिला विश्वविद्यालय को मुहम्मद बिन बख्तियार खिलजी ने नष्ट कर दिया था।

508.(D) **509.**(C)

❑❑